इन्टरव्यु-६

प्रः आपका नाम क्या है ?
जः मेरा नाम अब्दुल्ला है।

प्रः आपकी उम्र कितनी है ?
जः मेरी उम्र 42 साल है।

प्रः आपके पास कितने करघे हैं ?
जः हमारे पास 4 करघे हैं, जिसमें 3 चल रहे हैं एक बंद है।

प्रः बन्द क्यों है ?
जः उस पर काम नहीं हो रहा है।

प्रः उस पर मजदूर भी नहीं लगे हैं ?
जः नहीं ।

प्रः बाकि 3 करघों पर कौन काम करता हैं ?
जः तीन पर बच्चे काम करते हैं।

प्र: मजदूर भी रखा है ?
ज: नहीं बच्चे हैं।

प्र: आप अभी तो रंगाई का काम कर रहे हैं तो बुनाई का काम कब करते हैं ?
ज: हां, इससे जब फुरसत मिलेगी तो बुनाई करेंगे।

प्र: आपका मुख्य काम क्या है ?
ज: सब है, दोनों है।

प्र: यानी साड़ी से संबधित सभी काम करते हैं ?
ज: हां, सब काम करते हैं।

प्र: ये कतान आप गृहस्था से खरीदते है कि बाजार से खरीद कर लाते हैं ?
ज: नहीं खुद बाजार से खरीद कर लाते हैं।

प्र: साड़ी बेचते कैसे हैं ? गृहस्था के माध्यम से ही बेचते हैं ?
ज: हां, गृहस्था के माध्यम से ही बेचते हैं।

प्र: अच्छा बुनकारी के अलावा भी कुछ करते हैं जैसे कई लोगों का खेत वगैरह या ऐसा भी कुछ होता है ?
ज: नहीं हमारे पास कुछ नहीं है यह रहने की जगह है जो कुछ है कुल मिलाकर बस यही सब कुछ हमारी है सब बच्चे मां बाप मिलकर यही करते हैं।

प्र: महीने में कितनी साड़ी बिन लेते हैं, मतलब चारों करघों का मिलाकर ?
ज: चारों को मिलाकर महीना में तीन साड़ी बिन लेते हैं।

प्र: तीन बिन जाती है उसमें कितनी लागत लगती है ?
ज: लागत जितनी लगती है उतना पैसा तो हम लोगों को मिलता नहीं है।

प्र: वैसे लागत कितनी लग जाती है ?
ज: वो निर्भर करता है जैसा माल बनें।

प्र: अभी जो आप साड़ी बिन रहे हैं या जैसा कि बजरडीहा में बिनी जा रही है ?
ज: अरे इसमें हजार बारह सौ की लागत लगती है उसपर मजदूरी जोड़ा जाता है उसके बाद उसकी बिक्री होती है।

प्र: तो मतलब आमदनी कितनी हो जाती है ?
ज: आमदनी तो बतलाए किसी साड़ी में हजार किसी में बारह सौ पड़ी इससे ऊपर नहीं।

प्र: मतलब की एक साड़ी से लागत निकाल कर कितनी आमदनी आ जाती है यानी सूत काट कार मजदूरी का काट दिए ?

ज: यही मजूरी का ही बता रहे हैं हम कि सब कुछ काटने के बाद हजार-बारह सौ मिलता है। समझ में आई।

प्र: अच्छा इसी से सब खर्च निकल जाता है या कोई कर्ज लेना पड़ता है ?
ज: दिक्कत होती है तो दूसरे से कुछ लेना पड़ता है या उसी में रात दिन मेहनत करना पड़ता है कि अब एक महीना की साड़ी को हम 15-20 दिन में पूरा करते हैं।

प्र: अच्छा तो साड़ी बनते ही बिक जाती है कि इंतजार करना पड़ता है ?
ज: इंतजार करना पड़ता है तुरन्त नहीं बिकती ।

प्र: अच्छा गृहस्था से आपको तुरन्त पैसा मिल जाता है कि साड़ी दिए तो थोड़ा इंतजार करना पड़ता है ?
ज: साड़ी देने के बाद हफ्ता दो हफ्ता दस दिन इंतजार करना पड़ता है कभी तुरन्त भी मिल जाता है कभी 10-15 दिन भी।

प्र: कभी ऐसा भी होता है कि साड़ी रिजेक्ट कर दी गई ?
ज: हाँ, हो जाती है तब उसे मण्डी में लेकर घूमना पड़ता है कम की
रूकावट
नहीं बिका तो घाटा भी सहना पड़ता है
शुरू

प्र: खुद से बेचना पड़ता है ?
ज: अगर कोई नुक्स हो गया माल में तो वापस भेज देता है हमारे पास की नहीं बिकेगी तब हम उसे मण्डी में बेचते हैं घुमके अधिया दाम पड़ बेचेंगे कि दो हजार का माल है उसे हजार रुपया 800 रुपया में बेच कर आते हैं।

प्र: आपके पुरखे भी यहीं काम करते थे ?
ज: जी हां।

प्र: रहने वाले भी आप यहीं के हैं ?
ज: नहीं हम लोग मदनपुरा के रहने वाले है इधर 2-4 साल हुआ यहाँ आकर बसे हैं।

प्र: अच्छा इस बस्ती के ज्यादातर लोग सब उधर से आके बसे है क्या ?
ज: हां सब उधर से आके बसे हैं। (महिला आवाज) यह हमार बाप दादे के समय के पेशा है)

प्र: उधर क्यों छोड़ दिया ?
ज: उधर भी हम भाड़े पे ही रहते थे बाप दादे का बहुत थोड़ा जगह था गुजर बसर नहीं होता था यहां जमीन लिए है।

प्र: तो यहां खरीदा हुआ है ?
ज: जी।

प्र: अच्छा इधर जो जमीन नी वो बुनकरों को सस्ते में मिली ?

ज: नहीं किसान से हम लोग लिए हैं, सस्ते में नहीं मिली।

प्र: अच्छा मतलब ऐसा नहीं कि बुनकरों के लिए कोई अलग योजना हो ?
ज: नहीं (महिला आवाज) नहीं कोई छुट नहीं हम लोगों के लिए जो करते हैं हम कर रहे हैं)। यहां लाइन नहीं था सीवर नहीं था हमलोग मिलकर बनाये हैं।

प्र: यहां लाईट नहीं हैं अब थोड़ी देर में काम बन्द हो जायेगा ?
ज: हां क्यों कि लाईट नहीं है।

महिला आवाज- देखिएना कोई आने जाने की सुविधा नहीं है बीमार पड़ते हैं तो वहां तब जाना होता है मरीज को उठाकर ले जाना होता है।

प्र: अच्छा सरकार से कुछ सहायता मिलती है ?
ज: नहीं कोई सहायता नहीं हैं।

प्र: बैंक से लोन की योजना का लाभ मिला ?
ज: नहीं हम लोगों को कुछ फायदा नहीं हैं।

प्र: क्यों ?
ज: क्योंकि उसमें दौड़ानी बहुत है अगर हम दरख्वास्त करेंगे दलाल खायेगा तो उसमें आधा पैसा कटकर मिलेगा।
रूकावट
पच्चास हजार होगा तो बीस हजार मिलेगा
शुरू
जानकारी है नही, पढ़े लिखे है नहीं, थोड़ा बहुत बच्चे को पढ़ाये हैं, हम तो एकदम नहीं पड़े हैं।
(लड़के की आवाज- बैंक वाले 8प्रतिशत ब्याज लगाते हैं। 50 हजार में बीस हजार मिलेंगे वो कौन लेगा ऊपर से 8प्रतिशत ब्याज दो)

प्र: हां बात तो सही है, तो कभी आपने लिया नहीं ?
ज: नहीं।

प्र: या आपके किसी परिचित ने लिया हो, क्यों कि जिसमें पूछ रहे है वही कह रहा है नहीं ?
रूकावट
ज: कोई नहीं लेता, (लड़के की आवाज) अरे हम जब जमा ही नहीं कर पायेंगे तो क्यों लेंगे। यहां किसी के पास है ही नहीं।

प्र: यहाँ कोई बुनकर सोसाइटी है उससे मदद मिलती है ?
ज: नहीं कोई मदद नहीं है सब बड़े लोगों को मिलती है।

प्र: सोसाइटी में किस तरह के लोग हैं ?
ज: बुनकरों का बस नाम रहता बाकी सब मज़ा गद्दीदार लोग उठाते हैं।

रूकावट
जो बड़ा व्यापारी है उसी को सब मिलता है। चौक व मदनपुरा पर जो बड़ी-बड़ी पार्टी है वही लाभ उठाते हैं, गरीब लोगों को कोई फायदा नहीं है।

प्र: सोसाइटी में तो बहुत से बुनकरों का नाम होना जरूरी होता है ?
ज: हां,
रूकावट
वो अपनी तरफ से हमारा नाम दे देते है।

प्र: जितनी सोसाइटी है लगभग सब इसी तरह की है क्या ?
ज: बिल्कुल।

प्र: किसी सोसाइटी में आपका भी नाम है ?
ज: नहीं।

प्र: होगा भी तो आपको क्या पता ?
ज: हां वो लोग तो अपने से बना कर डाल देते हैं।
रूकावट
उनका पैसा कब आया कब मिला कब गया कुछ पता नहीं रहता।

प्र: कभी आपने नही सोचा कि सोसाइटी में आप भी शामिल हो जाए ?
ज: रूकावट
(लड़के की आवाज) इसका कोई फायदा ही नहीं है ना जब सुनवाई नहीं होती तो कहां जकारे इसीलिए बैठ जाते है।

प्र: अभी जो बुनकरो की स्थिति है वो हमेशा से रही है कि अभी परिवर्तन आया है ?
ज: नहीं ये तो हमेशा से है ऐसी ही स्थिति है जिनके पास पैसा है वो कमा रहा है। हम लोग तो इसी में खा रहे हैं, जी रहे हैं। जो मालदार है वो कमा रहें हैं।

प्र: इसका कारण क्या है, क्योंकि बनारसी साड़ी का नाम बहुत है ?
ज: रूकावट
इसमें जो मालदार है उन्ही का फायदा हो रहा है हम लोग तो दो टाईम खाते हैं एक टाईम भूखे रहते हैं बस इसी तरह से जिंदगी गुजर बसर हो रही है हम लोगों का कोई फायदा नहीं है। बड़े व्यापारी है उन्हीं के लिए सब कुछ है।

प्र: नहीं इसका कारण क्या है, जैसे रेशम सस्ता नही है, सरकार की योजना नहीं है, गद्दीदार लोग गड़बड़ करते हैं आप लोग क्या समझते हैं ?
ज: बताया तो गद्दीदार लोग साड़ी लेकर बेचते हैं माल बनाकर स्टॉक बनाकर बेचते है वो माल रखते है और धीरे धीरे बेचते हैं भई हम तो तुरंत पैसा चाहिए होता है हमे एक हफ्ता बाद मिलता है। न हमारे पास कभी उतना पैसा होगा ना फायदा होगा। स्टाक जमाकर बेचते है। मजदूर ही ना भरेगा ? ढेर रकम है अपना भाव बनाकर बेचता है।

प्र: इस समय जब साड़ी की मांग बढ़ती है तो फायदा होता है नहीं ?

ज: हम लोगों को कोई फायदा नहीं।

प्र: सूत घटे बढ़े उसका कोई फर्क ?
ज: हां जब सूत का दाम घट जाता है तो अधी घट जाती है लेकिन जब सूत बढ़ता तो हम लोग के काफि चिल्लाने के बाद बढ़ेगा।

प्र: उल्टा ही असर होता है ?
ज: हां, घटेगा तो तुरंत घटेगा बढ़ेगा तो चिल्लाने पर बढ़ेगा।

प्र: बनारसी साड़ी की मांग घटी की बढ़ी इसका पता चलता है ?
ज: हां पता चल जाता है कि कब मांग बढ़ी है और कब घटी है इतना अंदाज तो मिल जाता है। गद्दीदार इसका अंदाज नहीं वे देते तरे अपना छुपा कर रखते है हर चीज।

प्र: हां, रखते ही होंगे क्योंकि सुना है अफगानिस्तान से बहुत मांग आया है पर यहां किसी को पता ही नहीं ?
ज: हाँ वह बड़े व्यापारी लोगों को पता होगा हम लोगों को नहीं।

प्र: कभी ऐसा हुआ है कि गद्दीदार के खिलाफ विरोध किया गया हो बुनकरों ने आवाज उठाई हो ?
ज: हां आवाज तो कुछ दिन पहले कई लोग उठाये थे लेकिन उसका कोई असर नहीं हुआ।

प्र: इस समय कोई आवाज नहीं है ?
ज: नहीं इस समय कोई आवाज नहीं है।

प्र: बुनकरों के युनियन हैं क्या यहां ?
ज: नहीं यहां बुनकरों के युनियन नहीं हैं।

प्र: पूरे बनारस में नहीं हैं ?
ज: नहीं हैं, कोई नहीं हैं।

प्र: कभी बनाने का भी नहीं सोचा ?
ज: नहीं। (संकेत में)

प्र: आप लोगों को कैसे लगता है कि स्थिति में सुधार हो सकता है ?
रूकावट
ज: बस इंतजार ही है कि कब बदले बस यही है। (एक नई आवाज) अभी जो बीच में बनारसी की माँग काफी घट गई हैं।

इन्टरव्यू लेने वालीं- आप ज़रा नजदीक आ जाइए।
ज: जी, तो हम लोगों की मजूरी भी घट गई है जिसका 500 था अब 400 हो गया है क्योंकि मार्केट नहीं है। और वह जो घट गई है तो घट गई फिर नहीं बढ़ी।

प्र: मांग नहीं किए बढ़ाने के लिए ?

ज: मांग करेंगे तो कहेंगे काम बंद कर दो तो फिर खायेंगे कहां से।